उदात्त मानवीय जीवन के नायक डा0 राममनोहर लोहिया

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ (उ.प्र.)

डा0 लोहिया का अध्ययन का क्षेत्र बड़ा विशाल व फैला हुआ था, राजनीति, दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र और ललित लेखन आदि। डा0 लोहिया रामायण के बड़े प्रेमी थे। महाभारत, स्थापत्य कला, प्राचीन इतिहास और नक्षत्र–मण्डल में भी डा0 लोहिया की गहरी पैठ थी। इतिहास उनका प्रिय विषय था। इतिहास की कोई भी पुस्तक पाठ्यक्रम की कम और बाहर की ज्यादा उनसे छूटती न थी, लेकिन इतिहास अधिक पढ़ने का नतीजा निकला कि लोहिया के मन में लिखी गई इतिहास पुस्तकों के प्रति आस्था कम होने लगी। उनकी आलोचक बुद्धि को यह परखते देरी न लगी कि अधिकांश इतिहास पुस्तकें स्वार्थ तथा गलत तथ्यों पर ही आधारित हैं, इतिहास के प्रति यह खिलवाड़ उनमें उस समय से ही ग्लानि व खीझ भरने लगा। युवक लोहिया ने इतिहास में लिखे ऐसे कई स्थलों को झूठा सिद्ध किया। डॉ0 लोहिया का मानना था कि ऐसे हर इतिहास की पढ़ाई बन्द होनी चाहिए और शुद्ध व सच्चा इतिहास फिर से लिखा जाना चाहिए। डा0 राममनोहर लोहिया कालान्तर में गाँधीवाद की ओर झुकते चले गये। गाँधीवाद और मार्क्सवाद के सिद्धान्तों को मिलाकर डॉ0 लोहिया ने भारतीय समाजवाद का निर्माण किया। उन्हें पाश्चात्य ढंग के समाजवाद का अनुकरण रुचिकर नहीं था, डॉ0 लोहिया नेहरू के समाजवाद को ढकोसला कहने लगे, उन्हीं के शब्दों में–'एशिया का उदारवादी नेता (जवाहरलाल) एक ढोंगी और शब्दजाल वाला व्यक्ति है, जिसमें यथार्थ का अभाव है। वह भाषण समाजवादी लेकिन कर्म में अनुदारवादी है, वह आवाज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करते हैं और खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता का वायदा करते हैं, और साथ ही बादलों को दोषी ठहराते हैं कि उन्होंने वर्षा नहीं की। वह भ्रष्टाचार और पूंजीवाद की जमकर आलोचना करते हैं जबकि दूसरी ओर वह पक्षपात और प्रश्रय द्वारा उन्हें पनपाते हैं। वह झूठे और पाखण्डी हैं, लेकिन हमेशा आकर्षक नारे देते रहते हैं।

डा0 लोहिया के उदात्त मानवीय जीवन पक्ष ने उन्हें पद्दलित, पीड़ित एवं शोषित जनता का प्रिय नेता तथा सशक्त प्रवक्ता बना दिया। डा0 लोहिया में पदलोलुपता और सम्पत्ति के प्रति मोह नहीं था। डॉ0 लोहिया का जीवन नेता, मित्र, पथ–प्रदर्शक तीनों का अद्भुत सम्मिश्रण था। डा0 लोहिया के व्यक्तित्व में ठोसपन, विचार में परिपक्वता और आचरण में करूणा,प्रेम, निष्ठा एवं ईमानदारी की अभिव्यक्त होती थी। लेकिन साथ ही, वह विद्रोही, नास्तिक तथा क्रान्तिकारी भी थे। उनमें छलकपट, दोगलापन और झूठ नहीं था। अपनी सरल एवं सीधी भाषा में डा0 लोहिया ने अपने विचारों को व्यक्त किया, सच्चाई से ओतप्रोत आचरण और कार्यों को अहिंसात्मक रूप में सम्पन्न किया। मूलतः डॉ0 लोहिया सामाजिक चिन्तक, राजनीतिक विचारक तथा भविष्य द्रष्टा थे। व्यापक दृष्टिकोण, दूरदर्शिता, शान्ति और संतुलन उनके समाजवादी दर्शन की विशेषता थी। वह जनतांत्रिक मानववादी विचारक थे, जिन्होंने सदैव

मानव कल्याण पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

डॉ0 लोहिया ने सर्वत्र अन्यायों तथा विषमताओं के विरूद्ध संघर्ष किया। डा0 लोहिया ने हिन्दू वर्ण–व्यवस्था और हिन्दू धर्म तथा विभिन्न मजहबों की अनेक मान्यताओं को नहीं माना। इसीलिए उन्हें ध्वसंक, मूर्तिभंजक आदि कहा गया। लेकिन डा0 लोहिया का समाजवादी दर्शन परम्परावाद, जातिवाद, ईश्वरवाद, वर्णवाद, साम्प्रदायिकता, रंग–भेद, अस्पृश्यता, दरिद्रता, आदि का ध्वसंक होते हुए भी रचनात्मक और अहिंसक है उनके दर्शन और पद्धति में सृजनात्मक पक्ष अन्तर्निहित है, जिसके कारण डॉ0 लोहिया ने भारतीय एवं विश्व–चिन्तनधारा को व्यापक रूप में समृद्ध बनाया। डा0 लोहिया जीवन में सुखवादी तथा अतिवादी नहीं थे। डा0 लोहिया ने मानवीय भावना, संस्कृति एवं सम्पन्नता को वैभव और सम्पत्ति की दृष्टि से नहीं देखा। वह मानववादी मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, स्वतंत्र चिन्तन, विचार अभिव्यक्ति, समता, परस्पर सहयोग, सद्भाव, ईमानदारी और नैतिक गुणों को मानव जीवन में अधिक महत्व देते थे। डा0 लोहिया विश्व के पद्दलित, दरिद्र एवं शोषित लोगों की सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और धार्मिक मुक्ति के निष्ठावान समर्थक थे। उनके चिन्तन में जाति, धर्म, जन्म, रंग एवं राष्ट्र की संकुचित सीमाएँ नहीं थीं। यही कारण है कि डॉ0 लोहिया राष्ट्रवाद की सीमाओं को लाँघकर अन्तर्राष्ट्रवाद के पोषक बन गये, जो उनकी मानववादी अन्तर्दृष्टि का परिचायक है।

राष्ट्रीय जीवन को समृद्ध बनाने के लिए डॉ0 लोहिया ने वर्णवाद, जाति–प्रथा, नर–नारी असमानता, अस्पृश्यता,रंग–भेद नीति तथा अन्य ऐसी ही अनेक सामाजिक कुरीतियों और आर्थिक कट्टरताओं पर प्रभावशाली प्रहार किये। साथ ही उन्होंने आर्थिक समता और राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए सशक्त आन्दोलन किये। इस प्रकार डॉ0 लोहिया ने अपने समस्त जीवन को राष्ट्रीय संघर्ष और सेवा में अर्पित कर दिया था। उनकी अनेक नीतियों को आज व्यावहारिक रूप मिल रहा है, हालाँकि उनके कुछ विचार जैसे समाजवादी अर्थ–नीति, चौखम्भा– राज्य, आय–व्यय नीति, मूल्य–नीति और सम्पत्ति–नियंत्रण महत्वहीन होते प्रतीत हो रहे हैं क्योंकि विभिन्न राजनीतिक दल और सरकार उदारीकरण और निजीकरण की ओर दौड़ रहे है। यही स्थिति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देती है। डॉ0 लोहिया की विश्व–व्यवस्था, सरकार और नागरिकता का स्वप्न अभी भी दूरस्थ विचार हैं। वैसे विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे के निकट आ रहे है, पर उनमें आन्तरिक भावना से तालमेल नहीं है। संसार भर में व्यापक विषमताएँ अभी भी व्याप्त हैं और आतंकवाद तथा नस्लवाद जैसी बुराइयों ने विश्व को अशान्त, हिंसक और विक्षुब्ध कर रखा है। फिर भी डॉ0 लोहिया का समाजवादी चिन्तन, मानववादी दृष्टिकोण और समान–समाज का विचार सभी के लिए प्रेरणा–स्रोत बने हुए हैं। डॉ0 लोहिया महान् मानव की तरह राजनीतिक धरातल पर अवतरित हुए।'' डॉ0 लोहिया हमारे बीच से क्या गए, ऐसा लगा कि एक युग चला गया। फिर भी देश में आज ऐसी ही उम्मीद समाजवादी पार्टी के युवा चेहरों में दिखाई दे रही है जो उन सभी रास्तों पर चलने की क्षमता रखते हैं।

डॉ0 लोहिया प्रत्येक क्षेत्र में ठोस और शोषण–मुक्त मूल्यनीति निर्धारित करने में एक निपुण अर्थशास्त्री के समान थे। डॉ0 लोहिया के अनुसार मूल्य में दो फसलों के मध्य में एक आने सेर या सोलह प्रतिशत से अधिक का उतार–चढ़ाव नहीं होना चाहिए जिससे कि किसान को अपने श्रम का उचित मूल्य प्राप्त हो सके और उसे शोषण से बचाया जा सके। निर्मित माल और कच्चे माल के मध्य मूल्यों की विषमता को कम करने और कच्चे सामान के स्वामी को शोषण से बचाने के लिए डॉ0 लोहिया का मत है कि निर्मित माल का विक्रय मूल्य लागत व्यय के ड्योढ़े से अधिक होना चाहिए। इस ड्योढ़े मूल्य

में सभी कर तथा लाभ सम्मिलित होने चाहिए। उनके मत में सभी देशों में खेती और कारखानों की वस्तुओं के मूल्यों में सन्तुलन और न्याय स्थापित किया जाना चाहिए।

डॉ0 लोहिया ने मूल्य नीति की स्थापना हेतु कुछ सुझाव रखे। इस सन्दर्भ में डॉ0 लोहिया ने कहा कि 'देश के विभिन्न समुदायों, संघों और व्यापारिक संगठनों को इस पर व्यापक दृष्टि रखनी चाहिए। उन्हें मंहगाई भत्ता वगैरह बढ़ाने के बजाय ..... चीजों के दाम को स्थिर करने की कोशिश करनी चाहिए।' डॉ0 लोहिया का कहना था कि 'मैं यह मानता हूँ कि इस दाम–नीति को हकीकत बनाने के लिए हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन करने पड़ेंगे और सरकारी लूट, पूंजीपति मुनाफों और बड़े किसानों के हितों पर जमकर हमला करना होगा।' यह कार्य इतना सरल नहीं है, पर डॉ. लोहिया का कहना है कि इसके लिए प्रचार साधनों को अपनाना होगा और जनमत को अपने पक्ष में करना चाहिए।

डॉ0 लोहिया का कहना था कि 'जब किसी राष्ट्र के नागरिकों की आय में गहन अंतर होता हो तो एक समाजवादी का प्रथम कर्तव्य इस अन्तर में कमी लाना होता है, क्योंकि आय–विषमता के परिणामस्वरूप सामाजिक चेतना प्रायः लुप्त हो जाती है और शोषित वर्ग प्रायः शक्तिहीन होता जाता है। भारतवर्ष में न्यूनतम और अधिकतम आय में गहरा अंतर है। देश में व्याप्त विषमता के मुद्दे को डॉ0 लोहिया ने संसद में भी उठाया। उन्होंने कहा कि आम आदमी पर और प्रधानमंत्री पर होने वाले खर्च में बहुत अंतर है। 'भारत में औसत आदमी की आमदनी तीन आना है, जबकि प्रधानमंत्री के कुत्ते पर रोज तीन रूपए खर्च होते हैं। प्रधानमंत्री का खर्च 25 हजार रू. है।' यद्यपि सरकार डॉ0 लोहिया के कथन से सहमत नहीं हुई, फिर भी गुलजारीलाल नंदा ने औसत आदमी की आय साढ़े सात आना प्रतिदिन से अधिक नहीं मानी। उच्च अधिकारियों की सुविधाओं पर डॉ0 लोहिया के समान किसी भी विचारक ने दृष्टिपात नहीं किया। इन अधिकारियों की वास्तविक आय और उनके ऊपर खर्च की तुलना की जाए तो सुविधाओं पर कई गुना खर्च होता है, जिसका वहन गरीब जनता को करना पड़ता है। इस वर्ग को मिलने वाली सुविधाएं आय विषमता को और अधिक बढ़ावा देती है। डॉ0 लोहिया के अनुसार आधुनिक भारत में न्यूनतम और अधिकतम आय में 1:10 का अनुपात सम्भव है। डॉ0 लोहिया का मानना था कि केवल सरकारी कर्मचारियों की आय में सम्भव समता लाने से काम नहीं चलेगा। गैर–सरकारी लोगों को भी इस दायरे में लाना पड़ेगा। उद्योगपतियों, सेठों, वकीलों, राजनीतिज्ञों आदि सभी की आय नियंत्रित करनी चाहिए।

डा0 लोहिया ने 'सामंती भाषा में लोकराज असंभव' शीर्षक निबंध में सन् 1959 ई0 में ही सामाजिक सच्चाइयों पर टिप्पणी करते हुए कहा था –हिन्दुस्तान में जात–पाँत की चक्की बहुत बुरा और महीन पीसती है। एक तरफ जहाँ वह ब्राह्मण, बनिया, ठाकुर और दूसरी ओर तेली, कुर्मी, पासी, धोबी, बिन्द, अहीर, चमार, नाई आदि में फर्क करती है, और छोटी जातियों को पीसकर उनका कचूमर निकालती है; वहाँ दूसरी ओर, ब्राह्मण–ठाकुर को भी पीसती है और उन्हें दो टुकड़ों में बाँटती है; बड़–जात ब्राह्मण और छोट–जात ब्राह्मण। आप कहेंगे, बड़–जात ब्राह्मण और छोट–जात ब्राह्मण कैसे? बड़–जात ब्राह्मण ठाकुर वे हैं, जो सौ रूपये से अधिक रोज कमाते हैं और खर्च करते हैं, और जो गलालंगोट, चूड़ीदार पैजामा पहनते हैं, जिनके लड़के बाप को 'डेडी' और माँ को 'ममी' कहते हैं, और जिनमें अधिकतर दिल्ली और लखनऊ की कुर्सियों में हैं। छोट–जात ब्राह्मण–ठाकुर वे गरीब लोग हैं, जिनकी आमदनी और खर्च दो–चार दस रूपये रोज या उससे भी कम है। कभी–कभी तो बेचारे छोटे–जात ब्राह्मण को सीधा भी नहीं मिल पाता

है, जिनके बेटे बाप को 'बापू, अब्बा' और माँ को 'अम्मा, माई' कहते हैं, जो कुर्त्ता धोती, कोट, पैजामा पहनते हैं। शाहजहाँ अलीगढ़ी पैजामा पहनता था। अलबत्ता उसके दरबार के तबलची चूड़ीदार पैजामा पहनते थे। तबलची कभी–कभी बड़ा आदमी होता है। एक दफा मालवीय जी ने अपने जमाने के बड़े तबलची के बारे में कहा था कि वह मरे चमड़े से जिन्दा आवाज निकालता है। मैंने वेशभूषा का सवाल केवल इसलिए उठाया कि लोकतंत्र का सामन्ती भूषा के कारण खातमा न हो, और साफ हो कि जात–पात का कितना गहरा संबंध सामन्ती पोशाक से है।

डा0 लोहिया जी ने लिखा है "हजारों बरसों के बावजूद जातियां चल रही हैं। उन्होंने कुछ लक्षणों और रीतियों को जन्म दिया है। एक तरह का छँटाव हो गया है जो कि सामाजिक रूप से भी उतना ही सार्थक है जितना की सहज छँटाव के रूप में।.... शारीरिक और बौद्धिक काम के बीच यह अन्तर करना और एक को नीचा और दूसरे को ऊंचा काम समझना और इस अन्तर के बढ़ते हुए पेंच और स्थायित्व जाति को पैदा करते हैं और किसी भी देश की वनिस्वत हिन्दुस्तान को जाति का अनुभव गहरा है और दुनिया उससे कुछ सीख सकती है। जातियों ने हिन्दुस्तान को भयंकर नुकसान पहुंचाया है और हिन्दुस्तान उनसे निजात कैसे पा सकता है क्योंकि इसने मूल्यों का पूरा निष्कर्ष ही गड़बड़ा दिया गया है। ऊंची जातियां सुसंस्कृत पर कपटी हैं, छोटी जातियां थमी हुई और बेजान हैं। देश में जिसे विद्वता के नाम से पुकारा जाता है, वह ज्ञान के सार की अपेक्षा, सिर्फ बोली और व्याकरण की एक शैली है। उदारता का मतलब हो गया है उसे संकुचित करके जाति और रिश्तेदार के लिये उसका इस्तेमाल करना और उसके द्वारा अपना स्वार्थ साध लेना।.... सार यह है कि जाति की आवश्यकताएं राष्ट्र की आवश्यकताओं से भिड़ जाती है। इस भिड़न्त में जाति जीत जाती है। क्योंकि विपत्ति में अथवा रोजमर्रा की तकलीफों में व्यक्ति की यही एकमात्र विश्वसनीय सुरक्षा है।" यही कारण है कि जाति भारतीय राजनीति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सत्यता बन गयी है और राजनीति में जाति का प्रभाव पहले की अपेक्षा निरन्तर बढ़ रहा है। अब भारत के प्रायः सभी राजनैतिक दल जातियों के आधार पर न केवल प्रत्याशियों का चयन करते हैं वरन् सरकार बनाते समय नीतिगत निर्णयों में भी जाति को ध्यान में रखा जाने लगा है। क्षत्रिय राजनैतिक दलों के गठन का आधार प्रायः जातियां ही हैं। फलस्वरूप लोकसभा, विधानसभा, नगर निगम, नगर पालिका और ग्राम पंचायतों तक के चुनावों में जातिवाद हमें दिखाई देता है। जिसके विकृत सामाजिक और आर्थिक प्रभावों में हम सभी जीवन यापन कर रहे हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भाटिया पी.आर. – भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमारआनन्द,कुमार, मनोज–तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राममनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- *The Secret Film, www.Thesecret.tv* (रहस्य)
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी,

सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011

- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- वर्मा श्रीकांत रचनावली,खंड–3
- कथाक्रम, अप्रैल–जून 2011
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग, इलाहाबाद–211001, पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009

Copyright © 2014, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.